- डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया

खरी-खरी

रचयिता

डॉ. गंगा प्रसाद 'बरसैंया'

सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रकाशन वर्ष : 2010

मूल्य : देश एवं समाजसेवा

मुद्रक : जिला सहकारी संघ मुद्रणालय मर्या.
किशोर सागर रोड, छतरपुर 471001

खरी-खरी की अन्तर्कथा

'खरी–खरी' लिखी जाने की एक कहानी है। दिनांक 12 नवम्बर 2003 को दैनिक भास्कर, भोपाल के छतरपुर संस्करण का लोकार्पण कार्यक्रम था। संयोगवश मुझे उक्त कार्यक्रम का मुख्य अतिथि बनाया गया। उस कार्यक्रम में दैनिक भास्कर, भोपाल के सम्पादक श्री एन.के. सिंह, प्रबंधक सम्पादक श्री वोहरा, स्थानीय ब्यूरो चीफ श्री सुरेन्द्र अग्रवाल तथा कार्यक्रम के सूत्रधार पत्रकार श्री विनीत खरे भी उपस्थित थे। श्री अग्रवाल व श्री विनीत खरे के द्वारा ही मुझे मुख्य अतिथि बनाने का सुझाव दिया गया था। मुख्य अतिथि के रूप में दिये गये मेरे भाषण की सभी ने प्रशंसा की। श्री एन.के. सिंह व श्री वोहरा अत्यधिक प्रभावित हुए।

दूसरे दिन ही श्री विनीत खरे व श्री सुरेन्द्र अग्रवाल मेरे पास आये और बताया कि दैनिक भास्कर भोपाल के सम्पादक श्री एन.के. सिंह. आपसे बहुत प्रभावित हैं, और चाहते हैं कि मैं छतरपुर संस्करण में दैनिक घटनाओं को केन्द्र में रखकर नियमित रूप से प्रतिदिन बुन्देली में एक कालम लिखूँ। अतः आप इस अनुरोध को स्वीकार करें। मैंने अपनी असमर्थता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि यदि कॉलम नहीं लिख सकते तो प्रतिदिन कुछ काव्य–पंक्तियाँ ही लिखें जो दैनंदिन संदर्भों से जुड़ी रोचक और व्यंगात्मक हों, जैसा कि कार्टूनों में होता है। ये पंक्तियाँ कार्टूनों का सा आनन्द देंगी। इसके माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार होगा और अप्रत्यक्ष रूप से जागृति और

दायित्व का संदेश भी रहेगा। मैंने पुनः मना किया। कहा कि एक तो मैं कवि नहीं हूँ, कविता लिखना मेरा क्षेत्र नहीं है। दूसरा बुन्देली पर मेरा वैसा अधिकार नहीं है, जैसा इस प्रकार के लेखन में अपेक्षित है। अतः किसी अन्य सुयोग्य व्यक्ति को यह दायित्व सौंपें।

श्री विनीत खरे और सुरेन्द्र अग्रवाल मेरे प्रति बड़े आत्मीय हैं। मेरे प्रति उनके मन में बड़ा आदरभाव है। वे दोनों पीछे पड़ गए, कहा आपको ही लिखना होगा। हम किसी और से नहीं लिखवायेंगे। हमें विश्वास है कि आप इसका बखूबी निर्वाह कर सकते हैं। आप प्रयास तो करें। मरता क्या न करता। उनके आग्रह को मैं टाल न सका। दूसरे दिन ही कुछ पंक्तियाँ उन्हें लिख दीं। उन्होंने पसन्द कीं और उसके दूसरे दिन ही वे पंक्तियाँ 'खरी–खरी' स्तंभ के अन्तर्गत रंगीन अक्षरों में दैनिक भास्कर भोपाल के छतरपुर संस्करण के मुखपृष्ठ पर बॉक्स में प्रकाशित की गईं। देखकर मुझे भी अच्छा लगा। लोगों ने भी बहुत पसन्द किया और यह सिलसिला चल पड़ा। फिर वे मेरे चित्र सहित छपने लगीं। लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि अखबार मिलते ही सर्वप्रथम लोग उन पंक्तियों को ही पढ़ते। उन पर रोज प्रतिक्रियायें मिलतीं। कभी फोन पर, कभी भेंट होने पर। यदि कभी किन्हीं कारणों से पंक्तियाँ न छप पातीं तो लोग कारण पूछते। ऐसे भी कुछ लोग मिले जो उन पंक्तियों को अपनी डायरी में नोट करते। कुछ लोगों ने अपनी पद्यबद्ध प्रतिक्रियायें भी भेंजी, जिन्हें मैंने इस संग्रह के परिशिष्ट में दिया है।

पंक्तियों का उद्देश्य होता, उस दिन की या उस समय की किसी प्रमुख घटना या विसंगति पर व्यंग विनोद के साथ कटाक्ष, बिना किसी आग्रह के। पंक्तियाँ व्यक्ति पर नहीं, घटना या प्रवृत्ति पर केन्द्रित होतीं। यह सिलसिला लगभग पाँच वर्ष (नवम्बर–03 से सितम्बर–08 तक) निरन्तर चलता रहा।

जब दैनिक भास्कर भोपाल की बजाय सागर से छपना प्रारंभ हुआ तो 'खरी–खरी' के छपने का सिलसिला लड़खड़ाने लगा। स्तंभों की व्यवस्था बहुत कुछ अखबारों के सम्पादकों की रुचि पर निर्भर होती है। जिस प्रकार सागर के सम्पादकों–व्यवस्थापकों में बराबर परिवर्तन होता रहा, उसी प्रकार खरी–खरी स्तंभ के रूप–रंग और स्थान में भी परिवर्तन होने लगा। पहले मुखपृष्ठ पर सचित्र रंगीन, फिर मुखपृष्ठ पर बिना चित्र के रंगीन, फिर मुखपृष्ठ की बजाय बीच के पृष्ठों पर कभी यहाँ, कभी वहाँ। यह विश्रृंखलता नियमित स्तंभ के लिए अच्छी नहीं मानी जाती। मैंने जब कभी शिकायत की तो कुछ विवशतायें बताई गईं। अन्ततः 07 अक्टूबर 08 से यह स्तंभ बन्द कर दिया गया। नियम यह था कि प्रतिदिन फोन पर मुझसे पंक्तियाँ ली जाती थीं। सितम्बर 08 से इनका प्रकाशन अनियमित होने लगा था। 9 अक्टूबर 08 से यह क्रम बंद हो गया। पाँच वर्षों की इस अवधि में मैंने दो चार बार जब भी लिखना बंद करने की इच्छा व्यक्त की तो स्थानीय व्यवस्थापकों द्वारा इसे जारी रखने का बार–बार आग्रह किया गया। उनका कहना था कि लोग इस स्तंभ को बहुत पसंद कर रहे हैं। परन्तु सागर की व्यवस्था के आगे वे भी विवश हो गये।

व्यंग्य–विनोद कटाक्ष के साथ मैं जिस बुन्देली भाषा–शैली का प्रयोग करता था वह ऐसी होती थी जो सभी के समझ में आ सके, लेकिन किसी भी स्थिति में स्तरहीन न हो। उसकी साहित्यिक–भाषिक गरिमा और काव्यात्मक सौन्दर्य सुरक्षित रहे। यही कारण है कि इन पाँच वर्षों में इन पंक्तियों को लेकर कभी कोई विवाद या आलोचना सामने नहीं आई, बल्कि लोगों में यह विश्वास दृढ़ हुआ कि डॉ. बरसैंया में काव्य प्रतिभा कम नहीं है।" कुछ लोग तो 'खरी–खरी वाले बरसैंया जी' कहकर परिचय देने लगे।

'खरी–खरी' की इन पंक्तियों में व्यक्ति और समाज के विविध रूप और पक्ष अंकित हैं, जो पाठकों व सामाजिकों को सोचने–विचारने के लिए विवश करते हैं। शादी–विवाह, पूजा–पाठ, रीति–रिवाज, राजनीति, चुनाव, धर्म–कर्म, पाखंड, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, प्रकृति, फैशन, शिक्षा, सरकारी आचरण, चारित्रिक पतन, दिखावा, भेद–भाव, अवसरवादिता, नीति–अनीति, भूख, गरीबी, शोषण, घूसखोरी, कामचोरी आदि बहुत कुछ है। सत्य का बेलिहाज उद्घाटन इन पंक्तियों का मूल चरित्र है। न इनमें आग्रह हैं, न पक्षपात, न द्वेष, न भय। इनमें सब कुछ 'आँखन देखी' है – जैसा कबीरदास ने कहा है। 'आँखन देखी' घटनाओं ने कई बार आँखों को गीला किया है, अंतरात्मा को व्यथित किया है, मनको आक्रोश से भरा है, भावनाओं को विचलित किया है। जब पीड़ा का प्रतिकार क्रिया या प्रतिक्रिया से नहीं हो पाता, तब वह कलम के माध्यम से शब्दों में व्यक्त होकर समाज को जगाती, झकझोरती है। यही सब कुछ 'खरी–खरी' की इन पंक्तियों में भी है। पाँच वर्षों में लिखी पंक्तियों में से कुछ चुनिन्दा अंश ही यहाँ संकलित हैं। ये ऐसी पंक्तियाँ हैं जिनके भाव कभी पुराने नहीं होंगे। सजीव होकर पाठक को सचेत करते रहेंगे।

'खरी–खरी' की इन पंक्तियों का संग्रह प्रकाशित करने का मेरे मन में कभी कोई विचार नहीं आया, किन्तु कई मित्रों–शुभेच्छुओं और 'खरी–खरी' के तमाम प्रेमी पाठकों का आग्रह रहा है कि इनका संकलन प्रकाशित किया जाय। यहाँ सबका नाम लेना तो संभव नहीं है, पर आग्रहकर्ताओं की संख्या पर्याप्त है। कभी–कभी मित्रों शुभेच्छुओं का आग्रह भी व्यक्ति को प्रेरित और उत्साहित करता है। यह संग्रह उसी का प्रतिफल है।

जब 'खरी–खरी' का संग्रह प्रकाशित हो रहा है, तब मुझे दैनिक भास्कर भोपाल के तत्कालीन सम्पादक श्री एन.के. सिंह व प्रबंधक श्री वोहरा का स्मरण आना स्वाभाविक है, जिनके मन में छतरपुर संस्करण में बुन्देली भाषा को स्थान देने की बात आयी और मुझे अवसर मिला। इसके साथ ही मैं श्री विनीत खरे व श्री सुरेन्द्र अग्रवाल को नहीं भूल सकता, जिनके आग्रहों से 'खरी–खरी' का सिलसिला चल सका। एक प्रौढ़ आयु के गद्य लेखक को बुढ़ापे में ठोंक–पीटकर कवि बनाना पत्थर तोड़कर जल–धार निकालने की तरह है। इन दोनों के आग्रहों की छेनी ने ही यह संभव किया। भास्कर के स्थानीय व्यवस्थापक श्री आशीष खरे और उनके सहयोगी नीरज आदि को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जो रोज बिना नागा मुझसे फोन पर पंक्तियाँ लेते रहे और मुझे उदासीन नहीं होने दिया। मैं उन तमाम मित्रों–शुभेच्छुओं तथा 'खरी–खरी' के प्रेमी पाठकों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जो पंक्तियों को पढ़कर अपनी प्रशंसाओं से मुझे बराबर उत्साहित करते रहे। प्रशंसा कई बार संजीवनी का काम करती है, बशर्ते उसे अहंकार का रोग न लगे। 'खरी–खरी' की इन पंक्तियों को चयनित–व्यवस्थित करने में श्री शिवभूषण गौतम ने पूरा सहयोग किया है, तथा प्रतिष्ठित कवि–गीतकार श्री सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष' ने इन्हें अपनी दृष्टि से देख–परख कर प्रकाशित कराने की संस्तुति की है। दोनों मेरे स्नेही और आत्मीय हैं, उन दोनों को धन्यवाद देना मैं अपना कर्त्तव्य मानता हूँ।

नगर के प्रतिष्ठित विद्वान पंडित स्वामी शंकर मिश्र, श्री वेदप्रकाश वर्मा, श्री नवल किशोर रावत, श्री रविशंकर अवस्थी व श्री ग्यासीलाल गंधी आदि समय–समय पर अपनी पद्यबद्ध प्रतिक्रियायें देकर मुझे प्रोत्साहित करते रहे हैं। मैं उन सभी के प्रति उनकी सदाशयता के लिये अपनी कृतज्ञता और आदर व्यक्त करते हुये उनकी उर्न पंक्तियों

को संग्रह में शामिल करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। और अंत में जिला सहकारी संघ, छतरपुर को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने कम समय में ग्रंथ को प्रकाशित करने की व्यवस्था की। मेरे परिवार के सदस्य भी धन्यवाद के पात्र हैं जो मेरे इन कार्यों में कोई बाधा न पहुँचाकर सहयोगी बनते हैं। अन्यथा कई बार अर्थ लोभी परिजन इसे पैसे की बरबादी मानकर अड़ंगा डालने से नहीं चूकते। मैं ऐसे कई लेखकों को जानता हूँ जिनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ परिजनों की बाधा के कारण प्रकाश में नहीं आ सकीं।

जैसी बनी सो कै दई, रखी न लाग लपेट।
समझदार चिन्तन कहैं, मूरख कहैं चपेट।।

— ***डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया***
से.नि. प्राचार्य
12, एमआईजी, चौबे कॉलोनी
छतरपुर (म.प्र.)

6 फरवरी 2010
74वाँ जन्मदिवस

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

जन्मतिथि	:	6 फरवरी 1937
शिक्षा	:	एम.ए., पी-एच.डी.
सेवा	:	म.प्र. के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य, स्नातकोत्तर प्राचार्य पद से 31-12-96 को सेवानिवृत्त।
निवास	:	एम.आई.जी.-12, चौबे कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.) फोन : 07682-241024

पुस्तकें :

1. हिन्दी साहित्य में निबन्ध और निबंधकार (शोध प्रबंध) 2. हिन्दी के प्रमुख एकाँकी और एकाँकीकार, 3. छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार, 4. आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति, 5. रस विलास, 6. वीर विलास, 7. सुदामा चरित, 8. चिन्तन-अनुचिन्तन, 9. बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार (शोधग्रंथ), 10. अरमान वर पाने का (व्यंग्य), 11. निंदक नियरे राखिये (व्यंग्य), 12. अथ काटना कुत्ते का भइया जी को (व्यंग्य), 13. तुलसी के तेवर, 14. कर्म और आराधना, 15. रचना से रचना तक, 16. सृजन-विमर्श, 17. समवाय, 18. नारी : एक अध्ययन, 19. मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव, 20. रूपक और साक्षात्कार, 21. लोक वाटिका, 22. शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग, 23. कभी-कभी यह भी (काव्य संग्रह) 24. छत्तीसगढ़ का साहित्य-इतिहास तथा खरी-खरी

सम्मान-पुरस्कार :

1. महामहिम उप राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल जी शर्मा द्वारा साहित्य श्री, 2. अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा ''साहित्य श्री'' तथा भारत भाषा भूषण से सम्मानित, 3. नागरी प्रचारणी सभा, कानपुर द्वारा - 'साहित्य भारती', 4. तुलसी सम्मान व विद्रोही पुरस्कार, 5. ओरछा महोत्सव व केशव जयंती समारोह समिति द्वारा ''मित्र मिश्र अलंकरण'' एवं पुरस्कार, 6. लोक मंगल एवं लोक संस्कृति सेवा निधि ट्रस्ट उरई (उ.प्र.) द्वारा 'गौरी शंकर द्विवेदी 'शंकर' अलंकरण एवं पुरस्कार, 7. अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित.

संस्थाओं से सम्बद्ध :

1. अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा के कला संकाय के पूर्व डीन, हिन्दी बोर्ड के अध्यक्ष व कार्य परिषद के सदस्य, 2. पूर्व डायरेक्टर, महाकवि केशव अनुसंधान केन्द्र, ओरछा म.प्र., 3. म.प्र. आंचलिक साहित्यकार परिषद के उपाध्यक्ष, 4. बुन्देलखण्ड कला संस्कृति परिषद, छतरपुर के अध्यक्ष, 5. अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, छतरपुर के अध्यक्ष आदि.